साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह संपन्न

भाषा के अंधेरे उजाले ही उसमें जादू पैदा करते हैं – गोपीचंद नारंग

कोई भी भाषा छोटी या बड़ी नहीं होती – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

नई दिल्ली, 16 फ़रवरी 2016 । फिक्की सभागार में आयोजित एक गरिमापूर्ण समारोह में आज साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 अर्पित किए गए। मुख्य अतिथि के रूप में अपना व्याख्यान देते हुए विख्यात उर्दू विद्वान एवं अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. गोपीचंद नारंग ने कहा कि सच्ची जुबान वही है जो अंधेरे के बारे में भी बोले और उजाले के बारे में भी। यह अंधेरा उजाला ही भाषा में जादू पैदा करता है। उन्होंने सूर, कबीर, तुलसी और गालिब की रचनाओं से उदाहरण देते हुए कहा कि भाषाएँ हमेशा जोड़ने का काम करती है। खुदा ने हमको एक जमीन और एक भाषा दी थी लेकिन हमने अपनी–अपनी भाषाओं के अलग–अलग इतने खुदा बना लिए हैं कि हम एक दूसरे को भाई–चारे का संदेश देने की बजाए लड़ाई–झगड़े पर आमादा हैं।

समारोह के अध्यक्ष विश्वनाथ तिवारी ने कहा कि कोई भी भाषा बड़ी या छोटी नहीं होती। भाषा जिस परिवेश की होती है उसके बारे में उससे अच्छा कोई और भाषा व्यक्त नहीं कर सकती। उन्होंने निराला और भोजपुरी कवि स्वर्गीय जनार्दन पांडे की विधवा'' कविता का उदाहरण देकर बताया कि मेरी दृष्टि में जनार्दन जी से बेहतर उनकी मार्मिक हालत का कोई और भाषा व्यक्त नहीं कर सकती। उन्होंने अंग्रेज़ी, हिंदी, उर्दू आदि कई कवियों की रचनाओं से उदाहरण देकर अपनी यह बात प्रामाणित करने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि हमें पश्चिम के भाषाई आतंक से प्रभावित होकर रचनाएँ लिखने की जरूरत नहीं है बल्कि हमें अपने लेखन में मुक्त होकर, निर्भय होकर लिखना होगा। लेखक का काम सत्ता बनना नहीं या धाक जमाना नहीं। लेखक का मूल्यांकन उसकी रचना से होता है, पद से नहीं। उन्होंने वर्तमान समाज में व्याप्त हिंसा, असमानता और पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे लेखकों के सामने भी सबसे बड़ी चुनौती यही है कि इन मुश्किलों से कैसे लड़ा जाए।

कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी पुरस्कार विजेताओं और मुख्य अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों का घर है और पिछले 62 वर्षों से इस घर को ज़्यादा–से–ज़्यादा सुंदर बनाने में संलग्न है।

उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा सन् 2015 में किए गए कार्यक्रमों, प्रकाशन आदि की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि अकादेमी द्वारा आयोजित 479 कार्यक्रमों में 24 भारतीय भाषाओं के 3 हज़ार से ज़्यादा लेखक और विद्वानों ने सहभागिता की।

पुरस्कार वितरण समारोह में बाङ्ला (आलोक सरकार) और गुजराती भाषा (रसिक शाह) के लेखक स्वास्थ संबंधी कारणों से उपस्थित नहीं हो सके। गुजराती भाषा का पुरस्कार उनकी पुत्री ने ग्रहण किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष द्वारा दिए गए इन पुरस्कारों में प्रत्येक को एक लाख रुपये की राशि का चेक, शॉल और उत्कीर्ण ताम्रफलक प्रदान किए गए। पुरस्कार अर्पण के बाद सभी का आभार अकादेमी के उपाध्यक्ष चन्द्रशेखर कंबार ने व्यक्त किया।

कार्यक्रम के अंत में जवाहरलाल मणिपुर डांस अकादमी, इंफाल द्वारा 'रासलीला एवं पुंग चोलम' नृत्य प्रस्तुत किए गए।

कल प्रख्यात न्यायविद् एवं प्रसिद्ध गाँधी विचारक चंद्रशेखर धर्माधिकारी द्वारा संवत्सर व्याख्यान सायं 6.00 बजे रवींद्र भवन लॉन में दिया जाएगा। व्याख्यान का विषय है 'हम अपने आपको फिर से देखें, आँखों का चश्मा हटाकर'। इससे पहले सुबह 10.30 बजे पुरस्कृत लेखक 'लेखक सम्मिलन' में अपने रचनात्मक अनुभव साझा करेंगे।